National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(61): 160-162
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ मधु माला सिन्हा
अतिथि व्याख्याता संस्कृत विभाग,
टी. एन.बी. महाविद्यालय, भागलपुर
ति.माँ.भा.वि.वि. भागलपुर, बिहार

Correspondence:
डॉ मधु माला सिन्हा
अतिथि व्याख्याता संस्कृत विभाग,
टी. एन.बी. महाविद्यालय, भागलपुर
ति.माँ.भा.वि.वि. भागलपुर, बिहार

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता की उपयोगिता

डॉ मधु माला सिन्हा

सारांश

गीता सर्वशास्त्रमयी है। गीता में सारे शास्त्रों का सार भरा हुआ है ।इसे सारे शास्त्रों का खजाना कहे तो भी अतिशयोक्ति न होगी। गीता का भली भांति ज्ञान हो जाने पर सब शास्त्रों का तात्विक ज्ञान अपने -आप ही हो सकता है, इसके लिए हमें अलग से परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं रहती।

महाभारत में भी कहा गया है –

"सर्वशास्त्रमयीगीता" (भीष्मपर्व 43/2)

गीता एक शाश्वत ग्रंथ है, जो जीवन के हर मोड़ पर मार्गदर्शन करती है। गीता का संदेश किसी विशेष धर्म या जाति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी मनुष्यों को अपनी क्षमता को पहचानने का उपदेश देता है। मनुष्य को अपने कर्म को निस्वार्थ भाव से करने का प्रेरणा देती है। गीता में जीवन के विभिन्न समस्याओं जैसे तनाव, चिंता, नैतिक दुविधा और उसका समाधान बताया गया है। गीता हर युग में समस्त संसार के प्राणियों के लिए प्रासंगिक एवं उपयोगी है। गीता में वर्णित धार्मिक सहिष्णुता, निष्काम कर्म एवं स्थित प्रज्ञ का सिद्धांत अद्भुत एवं सराहनीय है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है, कि जब हमारा मन फल के चिंता के किए बिना कर्म करता है, तो उसका परिणाम भी अच्छे ही होते हैं, तथा आत्म संतोष प्राप्त होता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।। (भागवद् गीता 4/45)

आज के समय में मनुष्य अपने भीतर और बाहर दोनों का संतुलन बनाने के में असमर्थ हो गया है। गीता का अध्ययन से इसमें संतुलन बनाया जा सकता है, बस आवश्यकता इस बात का है, कि मनुष्य अपना कार्य बिना आसक्ति से करें। मनुष्य अनादि काल से ही आध्यात्मिक आधिदैविक एवं आधिभौतिक तीन प्रकार के संतापों से त्रस्त रहा है। इसका निवारण के लिए कर्म योग, भक्ति योग तथा ज्ञान योग का निरूपण गीता में किया गया है। अत: कल्याण प्राप्ति के अभिलाषी मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति में गीता का आश्रय लेना चाहिए। गीता का प्रत्येक श्लोक ज्ञान का भंडार है। गीता में कहा गया है, कि योग में स्थित होकर आसक्ति को छोड़कर सफलता और असफलता में जब जय- पराजय तथा दुख- सुख लाभ और हानि की चिंता छोड़कर कार्य करें।

आज का वर्तमान जीवन जितना सुविधाओं से परिपूर्ण है, उतना ही बेचैनी दुख और संताप से भरा हुआ है। पश्चिमी देशों ने मनुष्य के विकास का जो मार्ग दिया है, उसमें मनुष्य के मन को समझ कर केवल बाहरी पहलू को समझा है। आंकड़े बताते हैं कि आज अमेरिका सबसे विकसित देश है, जो विज्ञान की प्राप्ति में विश्व के सर्वोच्च शिखर पर है। लेकिन इस देश के नागरिक सबसे ज्यादा विक्षिप्त हैं, जिन्हें सोने के

लिए नींद की गोलियां लेनी पड़ती है। वर्तमान जीवन में दुख बेचैन एवं अवसाद का मूल कारण कर्म योग के रहस्य को ना समझने में है। यदि मनुष्य शब्द की गहराइयों को समझे तो मनुष्य का अर्थ है - मन वाला, इस पृथ्वी पर सबसे ज्यादा मनन करने वाला इंसान ही है। और तथा मन को समझते हुए विज्ञान के साथ

विकास दोनों का संतुलन बनाते हुए मनुष्य ऐसे विकास यात्रा पर पहुंच सकता है, जहां जीवन विशाद और भय से मुक्त परम आनंद की सीमा को छू सकता है ।यही वास्तविक विकास है ।

यदि हम श्री कृष्ण की गीता में अध्यात्म को देखें तो इसमें बहुत से मार्ग हैं, जो मानवता को प्रगति के तरफ ले जा सकता है। जैसे ज्ञान योग भक्ति योग कर्म योग गीता का कर्म योग तो हमेशा ही मनुष्य के लिए प्रासंगिक रहा है गीता में कहा गया है -

कर्मों बुद्धियुक्ता हि फलों त्यक्त्वा मनीषिन:।

जन्मबन्धविनिर्मुक्ता: पदों गच्छन्त्यनामयम्।।

(भागवद् गीता 2/51)

अर्थात समबुद्धि से युक्त ज्ञानी जन कर्मों से उत्पन्न होने वाली फल को त्याग कर जन्म रूप बंधन से मुक्त होकर निर्विकार परम पद प्राप्त हो जाते हैं। जब मनुष्य बिना फल प्राप्ति का अपना कार्य कुशलता से करता है। तब मनुष्य की सारी शक्तियां केंद्रीय भूत हो जाती है तथा आध्यात्मिक ऊर्जा उत्पन्न होती है, क्योंकि बिना आध्यात्मिक ऊर्जा के मनुष्य के अपने कर्म को श्रेष्ठ एवं उपयोगी नहीं बना सकता है, और इस ऊर्जा से जो कोई भी काम करता है, वह सिर्फ मानव जाति के लिए नहीं, अपितु पूरे अस्तित्व के लिए हितकारी होता है इसलिए आवश्यकता है गीता के कर्म योग को समझ कर मानव जीवन को सुखद बनाया जाए ।

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठतमकर्मकृत्।

कार्मते ह्यवश: कर्म सर्व: प्रकृतिजैर्गुणै:।।(गीता 3/5)

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति से अर्जित गुना के अनुसार विवश होकर कर्म करना पड़ता है। मनुष्य अपना कर गुण धर्म (रज,तम, और सत्) के अनुसार फल पता है और काम करता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि मनुष्य के चरित्र का निर्माण उसके अच्छे और बूरे कर्मों से होता है। जब हम लाभ हानि के विचार से दूर हो कर कोई काम करते हैं तो उसके अच्छे परिणाम होते हैं और इसी से हमें आत्म संतुष्टि मिलेगी। रविंद्र नाथ टैगोर ने भी कहा है कि

"वर्किंग फॉर लव इस फ्रीडम इन एक् आनंद"

अध्यात्म या ईश्वर का मार्ग हमेशा देव यह प्रेरणा देता है, की बुराई कहीं पर भी हो हमें उसका सदैव विरोध करना चाहिए। बुराई कहीं भी हो सकती है, समाज में अपनों में या अपने आप में परंतु हर जगह आपका कर्तव्य बनता है, कि आप उसे लड़े। कभी आप अपने अहंकार भावनात्मक लगाव के कारण अपने आप को अच्छाई के राह से न हटायें। आज हमारे देश की परिस्थिति ऐसी है, कि हर क्षेत्र में अर्जुन चाहिए, जो अपने कर्मो को हर स्तर पर पुरी निपुणता से निभाएँ। आज का अर्जुन आप हैं, जो शिक्षक भी हैं। इंजीनियर भी है, चिकित्सक भी हैं, और एक मजदूर भी हैं हर इंसान में अनेको अच्छाई और बुराई होती है, परंतु हमारा प्रयत्न यह होना चाहिए कि हम बुराईयों से दूर होते जायें। हमारे पास हमारा वो महान ग्रंथ गीता है जो हमें खुद को पवित्र बनाना सीखना है। हम जितने पवित्र होते जायेंगें हमारे अंदर की बुराईयॉ हारते जायेगी। जीवन के हर क्षेत्र में न जाने कितने कौरवों और कंस से सामना करना पड़ रहा है। इसका कुछ भाग हमारे अंदर भी छिपा है। हमे अपने आप में कहीं अर्जुन है तो कहीं दुर्योधन भी ।हमारे भीतर छुपा यहीं दुर्योधन देश के परेशानी के कारण बना हुआ है। अपने अंदर छुपे इस दुर्योधन से लड़ना होगा तथा अर्जुन के भांति अपने कर्म का निष्पादन पूरी निष्ठा और लगन से करें। यदि आप मजदूर हो या बाबू हैं एक सिपाही हैं जो भी हैं, यह ईश्वर द्वारा प्रदत्त कर्म करने का अवसर है। यदि आप इसे नहीं करते तो आप इस संसार में अपयश का भागी बनते हैं।

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।

तत: स्वधर्म कीर्ति च हित्वा पापमवाप्स्यसि।। (गीता 2/31)

आज के परिपेक्ष्य मे यह बात कितनी प्रयोगिक साबित हो रही है, यदि आज हम अपनी मन की विवशता बता अपने आप को दुर्बल कर अपने समाज के लिए कुछ नहीं करेंगे, तो हम विश्व गुरु कहलन वाले भारत की उसके रहने वाले समाज की अपयश में भागीदारी बनेंगे। जिसकी सभ्यता संस्कृति पर हमें गर्व है, हम उसकी अपयश का भागीदारी नहीं बन सकते हैं ।क्यों ना हम अपने देश समाज के लिए अपने अंदर छुपे दुर्योधन को पराजित करें, हमें हमारे देश के खोया हुआ अभिमान वापस लाना है। परेशानी आएंगे सर्वथा आएंगे परंतु उसका अंत भी होगा। इसलिए हमें सहना होगा देश और समाज के लिए कुछ करना होगा-

"सुखदु:खे समें कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।"

ततौ युद्धाय युजस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।। (गीता 2/38)

अर्थात् जय- पराजय, लाभ- हानि और सुख -दुख को समान समझकर उसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा। इस प्रकार युद्ध करने में तु पाप को नहीं प्राप्त होगा। हमें अपने कर्म के प्रति व्याकुल नहीं होना है, क्योंकि अगर हम व्याकुल हो गए तो हमारे आत्मा को वह सुख नहीं मिल पाएगा, जिसकी चाह हर श्रेष्ठ मनुष्य को होती है। गीता उपदेश से अंतरंग में देखने की प्रवृत्ति आती है। जो अंतरंगी भक्ति वाह्य विषम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की अपूर्व क्षमता आती है। गीता मन की हितकारी और आत्मा का मित्र है।

गीता आज के समय में मानवता को स्थापित करने वाला अनुपम एवं अद्वितीय ग्रंथ है। सामान्य कर्मों के द्वारा जीवन में सुख भरने के साथ-साथ ईश्वर से मिला देने का आश्चर्यजनक कार्य गीता ने कर दिखाया है, जीने की कला का नाम गीता है। गीता में कहा गया है, कि फल की चिंता किए बिना कर्म करना ही मनुष्य के बस में है, अर्थात् अधिकार क्षेत्र में है। कर्म का फल भगवान पर छोड़ने मात्र से ही फल के लिए दुखी होना छोड़ देते हैं और फल का ध्यान छोड़ते ही हमारे सारे तनाव, चिंताएं समाप्त हो जाती है। जीवन में सदा सफलता नहीं मिल सकती आदमी कभी सफल होता है, तो कभी असफलता हाथ लगती है। यह प्रकृति का नियम है, इन घटनाओं को जीवन का अभिन्न मानना चाहिए परंतु लोग का काम बिगड़ जाने पर चिंता के कारण तनाव में चले जाते हैं। मानसिक रोगी बन जाते हैं ,कभी-कभी तो इतना हताशा होती है, कि आत्महत्या का प्रयास तक करते हैं। आए दिन समाचार पत्रों में ऐसी खबरें आती है, कि अमुख छात्र-छात्रा ने परीक्षा में असफल होने पर आत्महत्या कर ली ।लेकिन अगर हम गीता के उपदेश का मने और फल का अधिकार ईश्वर पर छोड़ दें, तो ऐसी नौबत नहीं आएगी। गीता एक ऐसी चमत्कारी ग्रंथ है, जिसमें जीवन की हर समस्या का समाधान है। वर्तमान युग में भी गीता उतना ही स्फूर्तिदायिनी दिखाई देती है, जितना की महाभारत समय में। गीता के संदेश का प्रभाव केवल दार्शनिक अथवा विद्वत चर्चा का विषय नहीं है, अपितु आचार विचारों के क्षेत्र में भी यह सदैव जीता जागता प्रतीत होता है। गीता में हमें परम ज्ञान का उपदेश दिया गया है, भगवत गीता का जो सार तत्व है वह अनुपम और अनुकरणीय है ।

परिवर्तन ही संसार का नियम है एक क्षण में तुम करोड़ों का स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा- तेरा, छोटा- बड़ा, अपना- पराया मन से मिटा दो, फिर सब तुम्हारा है तुम सबके हो।

आज हमें ऐसा बनने की आवश्यकता है, जिससे सिर्फ हमारा वर्तमान नहीं, हमारे आने वाले पीढ़ियां तक याद रखे ।जब आनाशक्ति पूर्वक हम अपने कार्यों का निष्ठा पूर्वक निष्पादन करेंगे, तो वही हमारा आनंद का कारण भी बनेगा। हमारे अंदर और बाहर दोनों में संतुलन बनाकर काम करने से अहंकार, लोभ, जलन से दूर होकर एक श्रेष्ठ मनुष्य बन सकते हैं। हमारा हर कर्म पूरी मानव जाति के समृद्धि के लिए यश का कारण बनता है। हजारों वर्षों से लाखों विद्वानों ने गीता से प्रेरणा प्राप्त की है। गीता आज भी उपयोगी है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 भगवत गीता गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशक गोविंद भवन कार्यालय गीता प्रेस गोरखपुर श्लोक संख्या 3/ 4, 2/ 4 , 2/ 48, 3/5, 2/5 ।

2 महाभारत का भीष्म पर 43/1 ।

3 राधाकृष्णन भागवत गीता पृष्ठ संख्या 17।

4 स्वामी अडगडानंद जी “यथार्थ गीता “श्री परमहंस स्वामी अडगडानंद जी आश्रम मुंबई 2015। पृष्ठ संख्या 27।

5 श्रीमद् भागवत गीता तत्वविवेचन हिंदी टीका सहित प्रकाशक एवं मुद्रक - गीता प्रेस, गोरखपुर (गोविंद भवन कार्यालय कोलकाता का संस्थान) श्लोक 2/20, 2/25, 2/27 ।

6 कर्मयोग, स्वामी विवेकानंद पृष्ठ- 9 श्री रामकृष्ण स्मृतिलाल, रामकृष्ण मठ, नागपुर।

7 श्रीमद् भागवत गीता यथारूप “स्वामी प्रभुपाद” पृष्ठ -114 मंगलम भारत गैस सर्विस, इस्कॉन मंदिर,नोएडा।